अंग्रेजी भाषा और प्राथमिक शिक्षा

❑ दिलीप सिंह तंवर

विविध भाषा-भाषी लोगों के बीच अंग्रेजी भाषा का सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयोग करना, सूचना तकनीक में अंग्रेजी के प्रयोग एवं ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं से संबंधित सामग्री के अंग्रेजी में सहज सुलभ होने जैसे तथ्य क्या अंग्रेजी भाषा का शिक्षा के साथ कोई सरोकार बनाते हैं ? यदि हां तो उसमें प्राथमिक शिक्षा की भूमिका क्या व कैसी होगी ? वे कौन से कारण हैं या थे जिनके चलते अंग्रेजी भाषा उभयनिष्ठ भाषा के रूप में सर्वाधिक प्रयोग किये जाने वाली भाषा बनी ? इन्हीं प्रश्नों को उभारने के प्रयास में यह लेख संदर्भित है ।

यदि मानवीय विकास के इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि मानव के पूर्वजों ने अकेले रहने के बजाय (बौद्धिक विकास के साथ-साथ) झुण्ड में रहना क्यूं उपयुक्त समझा ? इसका कारण स्पष्ट था कि अकेला मानव शिकार करने में हमेशा सफल नहीं हो पाता था, वह अपने कुछ अनुभवों को दूसरों के साथ बांटना चाहता था, और शायद दूसरों के अनुभवों को जानने की जिज्ञासा भी रही हो। इन्हीं सब कारणों के चलते उसने झुण्डों में रहना प्रारंभ किया होगा । अत: यहां मानव आत्म निर्भरता की ओर से अन्त: निर्भरता की ओर बढ़ रहा था । जिसके लिए कम से कम दो लोगों में अंतर्क्रिया होना आवश्यक शर्त है । यहां अंतर्क्रिया से आशय अनुभवों (ज्ञान) वस्तु व सहयोग के विनिमय-व्यापार से है । यह सारा विनिमय व्यापार संप्रेषण से ही संभव हो पाता है। समाज का ढांचा भी इसी विनिमय-व्यापार पर खड़ा होता है। यदि कहा जाये कि इसी व्यापार के चलते समाज अस्तित्व में आये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार अकेले मानव से झुण्डों तक का सफर तय किया गया, उसी प्रकार इन झुण्डों से वर्तमान समाज अस्तित्व में आए । ऐसे भिन्न-भिन्न झुण्ड दुनिया में भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न समयों में अस्तित्व में आये। जिन्होंने विविध प्रकार के समाजों की आधारभूमि तैयार की। इन विविध समाजों के बीच प्रचलित मान्यताओं और संप्रेषणों के तरीकों (यथा भाषा) में पर्याप्त भिन्नतायें थीं ।

चूंकि कोई भी समाज अपने आप में पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर नहीं होता और समाज को विकास के लिए अन्त: निर्भरता को स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है । अन्तर्निभरता, एक समाज से दूसरे समाज के बीच ज्ञान, वस्तु और सहयोग के विनिमय-व्यापार हेतु । यह विनिमय-व्यापार सुचारू रूप से तभी संभव हो सकता है जब उन दो या दो से अधिक समाजों के बीच अंतर्क्रिया हेतु संप्रेषण हो । इस संप्रेषण के लिए आवश्यक है कि ये दो या दो से अधिक समाज संप्रेषण के समान तरीके का प्रयोग करते हों। यदि ऐसा नहीं है तो इन समाजों को अंतर्क्रिया करने हेतु संप्रेषण (भाषा) का एक उभयनिष्ठ तरीका बनाना पड़ेगा । यह तरीका इन समाजों में से किसी एक समाज में पहले से प्रचलित भी हो सकता है या कोई और तरीका भी हो सकता है। यहां मुख्य बात संप्रेषण के उभयनिष्ठ होने की है ताकि दो या दो से अधिक समाज आपस में संप्रेषण व अंतर्क्रिया को संभव बना सकें ।

इसी प्रकार वर्तमान में कोई भी राष्ट्र पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर राष्ट्र नहीं है । उसे भी अन्त: निर्भरता को स्वीकार करते हुए अन्य राष्ट्रों के साथ विकास के लिए (ज्ञान, वस्तु व सहयोग का) विनिमय व्यापार करना ही होता है। यहां भी इस व्यापार के लिए संप्रेषण के एक उभयनिष्ठ माध्यम का होना अनिवार्य है । यहां समस्या उठती है कि वह कौनसा उभयनिष्ठ माध्यम (भाषा) हो, जो विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संप्रेषण के लिए एक उभयनिष्ठ माध्यम (भाषा) बन सके ?

आज यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि अंग्रेजी भाषा ने अपने आपको विश्व में सर्वाधिक काम आने वाली उभयनिष्ठ भाषा के रूप में स्थापित कर दिया है । यहां प्रश्न उठता है कि यह कार्य अंग्रेजी को ही क्यों मिला ?

इसके कारणों में जाने से पहले इन भ्रांतियों को दूर कर लेना आवश्यक है ।

- अंग्रेजी भाषा विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है ?
- अंग्रेजी विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है ?

भाषा की श्रेष्ठता का मामला भाषा द्वारा सटीक अभिव्यक्ति से संबंधित है तो कोई भी स्थानीय भाषा-भाषी व्यक्ति अपने आपको अपनी भाषा में उतने ही सटीक व स्पष्ट ढंग से अभिव्यक्त कर व समझ सकता है, जितना की कोई अंग्रेजी भाषा-भाषी व्यक्ति अपने आपको अभिव्यक्त कर पाता है।

भाषा	बोलने वाले लोगों की संख्या
चीनी	114.4 करोड़
अंग्रेजी	46.8 करोड़
हिन्दी	40.0 करोड़
स्पेनिश	37.1 करोड़
रूसी	29.1 करोड़
अरबी	21.1 करोड़

स्रोत : मनोरमा ईयर बुक 1995

अंग्रेजी भाषा को अंतर्भाषा-भाषी लोगों के बीच उभयनिष्ठ भाषा के रूप में सर्वाधिक लोगों द्वारा उपयोग किये जाने के कारण उपरोक्त न होकर कुछ और हैं । इसे उदाहरण द्वारा देखें तो मानों सौ वर्ष पूर्व एक दक्षिणी एशियाई देश का व्यक्ति लेटिन अमेरिकी देश के किसी व्यक्ति से मिला होगा तो उन दोनों के बीच में संप्रेषण स्वत: ही अंग्रेजी भाषा में चला होगा। ऐसा इसलिये क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों पर शासक वर्ग अंग्रेजी भाषा-भाषी था । और दोनों ही क्षेत्रों में शासकों द्वारा शासन के लिये आवश्यक अपनी भाषा के जानने वाले लोगों की संख्या बढ़ाई गयी थी । अत: अंग्रेजी भाषा का उभयनिष्ठ भाषा के रूप में सर्वाधिक उपयोग के पीछे कारण अंग्रेजी उपनिवेशवाद द्वारा क्षेत्रिय विस्तार के साथ-साथ शासन के लिए आवश्यक भाषा (अंग्रेजी) का विस्तार किया जाना था। अन्तत: भाषा के विस्तार का सरोकार सीधे-सीधे तो नहीं पर जुडता सत्ता से ही है । इसे एक और उदाहरण द्वारा देखा जा सकता है, यदि संपूर्ण भारत पर कोई तमिल भाषा-भाषी शासक शासन करता तो निश्चत रूप से भारत की राजकीय भाषा तमिल होती । जैसा कि मुगल काल में फारसी व ब्रिट्रिश काल में अंग्रेजी थी ।

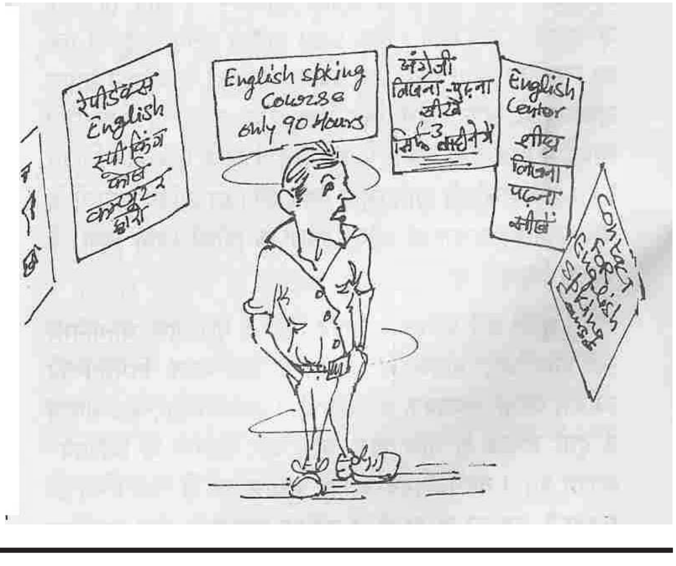
विश्व में अंग्रेजी भाषा जानने वाले (न कि बोलने वाले) लोगों की संख्या उपनिवेश काल से ही लगातार बढ़ रही है । यही कारण है कि अंग्रेजी विश्व में अन्तरभाषी लोगों के बीच बोली जाने वाली मुख्य उभयनिष्ठ भाषा के रूप में अपनी भूमिका निभा रही है।

शिक्षा और अंग्रेजी भाषा- यदि विस्तृत अर्थ में देखा जाये तो प्राणी मानव का सामाजिक मानव में परिवर्तन ही शिक्षा है जिसमें मानव भौतिक एवं मानवीय जगत से अंत:क्रिया करके सुसंगत समझ के विकास की ओर बढ़ता है । जो कि एक सामाजिक कर्म है और समाज में रहकर ही संभव है ।

जन्म के साथ ही मानव इस दुनिया से अन्त:क्रिया आरंभ कर देता है । जिसमें वह अपने आस पास की दुनिया को केवल देखता और महसूस ही नहीं करता है। बल्कि उसे अर्थ भी देता है। दुनिया की हर वस्तु को अर्थ देने का आशय है कि उसे मात्र होने से ऊपर उठा कर सार्थक होने के स्तर तक पहुंचाना । इसांन यह सार्थकता अवधारणाओं के माध्यम से पैदा करता है । इन अवधारणाओं को इंगित करने के लिए अपने मानस में बहुत सारे प्रतीक बनाता है और उन प्रतिकों व अवधारणाओं के बीच आपसी संबंधों की धारणायें बनाता है। उन प्रतिकों का मानस संचालन करता है। बिना प्रतीकों के इंसान यह सारा व्यापार कर ही नहीं सकता है । भाषा इसी प्रतीक व्यापार का आवश्यक व अविभाज्य अंग हैं बिना इन अवधारणाओं को नाम दिये इंसान इनके आपसी संबंध निर्धारण तथा मानस संचालन में सक्षम नहीं हो सकता शब्द इन अवधारणाओं के नाम ही है । यह अवधारणा संरचना बना पाने को ही ''समझ बना पाना'' कहते हैं इसलिए समझ बना पाना और भाषा का विकास एक दूसरे पर आधारित है । एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है ।

यहां भाषा मात्र साधन नहीं है । बल्कि समझ का अविभाज्य अंग है जो कि समझ के विकास के साथ साथ आवश्यक रूप से विकसित होती है और बिना समझ के विकास के इसका विकास अवरुद्ध होता है ।

आरंभिक स्तर पर बच्चों की समझ का आधार उसकी मातृ भाषा ही होती है लेकिन बच्चे के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के साथ साथ उसकी अन्त: क्रिया का दायरा भी बढ़ता जाता है । भारत जैसे देश में लगभग हर सौ किलोमीटर के लगभग स्थानीय



भाषा या बोली परिवर्तित हो जाती है । वहां बच्चा अपनी अंतर्क्रिया का दायरा बढ़ने पर अपनी मातृभाषा के द्वारा भौतिक एवं मानवीय जगत के साथ अंतर्क्रिया करने में सहज महसूस नहीं करता। जैसे यदि कोई मेवाडी जानने वाला व्यक्ति ढूंढाणी भाषा-भाषी क्षेत्र में दूसरों को समझने एवं स्वयं को उन्हें समझाने में कष्ट महसूस करता है। लेकिन यदि यही व्यक्ति ढूंढाणी क्षेत्र में हिन्दी भाषा को संप्रेषण का माध्यम बनायें तो काफी हद तक वह सहज अन्त:क्रिया कर सकता है । अत: एक स्तर के बाद बच्चे को अपनी मातृ-भाषा के अतिरिक्त एक और भाषा सीखनी होती है जो उसकी अन्तर्क्रिया के दायरे को बढ़ाती है । (संपूर्ण विश्व के लिए यह अनिवार्य नहीं है)। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में इस दूसरी भाषा का काम हिन्दी भाषा ने बखूबी संभाला हुआ है । परन्तु मानव की अन्तर्क्रिया का क्षेत्र मात्र हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है । बल्कि उसे तो संपूर्ण जगत के साथ अन्तर्किया करनी होती है । तब यहां एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस होती है जो उसकी समझ के विकास में दुनिया के स्तर पर ना सिर्फ मदद करें बल्कि उसे अन्तर्क्रिया का एक और माध्यम प्रदान करे ।

वर्तमान में कोई भी राष्ट्र पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर राष्ट्र नहीं है । उसे भी अन्त: निर्भरता को स्वीकार करते हुए अन्य राष्ट्रों के साथ विकास के लिए (ज्ञान, वस्तु व सहयोग का) विनिमय व्यापार करना ही होता है। यहां भी इस व्यापार के लिए संप्रेषण के एक उभयनिष्ठ माध्यम का होना अनिवार्य है । यहां समस्या उठती है कि वह कौनसा उभयनिष्ठ माध्यम (भाषा) हो, जो विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संप्रेषण के लिए एक उभयनिष्ठ माध्यम (भाषा) बन सके ?

चूंकि आज अंग्रेजी भाषा विश्व में अन्तर्भाषा-भाषी लोगों के बीच काम आने वाली मुख्य उभयनिष्ठ भाषा है और ज्ञान-विज्ञान की तमाम शाखा-प्रशाखाओं संबंधित सामग्री अंग्रेजी भाषा में सहज सुलभ है इसलिये मानव की भौतिक एवं मानवीय जगत की समझ के विकास में अंग्रेजी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाने की केन्द्रीय स्थिति में है।

प्राथमिक शिक्षा में अंग्रेजी भाषा

प्राथमिक शिक्षा में मुख्यत: भावी शिक्षा की बुनियाद रखने का कार्य किया जाता है । इसी बुनियाद पर मानवीय एवं भौतिक जगत की समझ का स्तंभ खड़ा होता है । यह पहले ही कहा जा चुका है कि आज अंग्रेजी भाषा समझ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाने की केन्द्रीय स्थिति में है। लेकिन उसका आशय यह बिल्कुल नहीं है कि अंग्रेजी भाषा के बिना समझ का विकास होगा ही नहीं या अवरुद्ध हो जायेगा। यह तो मानव के अन्तक्रिया: के दायरे को बढ़कर दुनिया के प्रति समझ बनाने में अतिरिक्त सहायता की भूमिका निभा सकती है ।

जब हम प्राथमिक शिक्षा में समझ के विकास की बुनियाद रखने की बात कहते हैं तो यह बुनियादी अंग्रेजी भाषा की भी क्यों न हो ? यहां यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है कि जब बच्चा पहले से दो भाषाऐं (स्थानीय एवं हिन्दी) सीख रहा है तो क्या उस पर तीसरी भाषा का शिक्षण एक अतिरिक्त भार नहीं हो जायेगा। यह प्रश्न सीधा सीधा भाषा शिक्षण के तरीकों से जुडता है। बच्चा तो बडे मजे के साथ अंग्रेजी भाषा भी सीख सकता है लेकिन आवश्यकता है अंग्रेजी भाषा सिखाने के ऐसे तरीकों की जो बच्चे पर अतिरिक्त बोझ न डालें । इसके लिए भाषा सीखने का वही तरीका सर्वाधिक उपयुक्त है जिस तरीके से बच्चा अपनी मातृ भाषा सीखता है बिना बोझ, बिना रटे, बिना डरे । सिर्फ अपने मातृभाषी परिवेश में रहकर जहां उसका औपचारिक रूप से कोई भी भाषा शिक्षण नहीं करता और वह अपनी भाषा में अपने आपको अभिव्यक्त करने व दूसरों को समझ पाने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । अत: अंग्रेजी भाषा के ऐसे शिक्षण के लिए आवश्यकता होगी शाला में ऐसा वातावरण तैयार करने की जो इस तीसरी भाषा के शिक्षण की आधार भूमि बने । इस वातावरण में बच्चा अंग्रेजी का प्रारंभिक ज्ञान उसी भांति सहज तरीके से प्राप्त करे जैसे वह अपनी मातृ भाषा सीखता है ।

हो सकता है कि यह अंग्रेजी सिखाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका न हो पर एक कारगर तरीका हो सकता है । शाला में ऐसा वातावरण तैयार करने के लिए अंग्रेजी भाषा में योग्य शिक्षकों की आवश्यकता होगी । परन्तु उत्तर भारत के और मुख्यत: ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों की स्वयं अंग्रेजी में स्थिति संतोषजनक नहीं है। फिर भी एक ऐसा तरीका निकाला जा सकता है जो शाला में अंग्रेजी भाषा शिक्षण के दौरान न सिर्फ बच्चों बल्कि शिक्षकों को भी अंग्रेजी भाषा में आत्मविश्वास के साथ काम करने व अंग्रेजी भाषा की सामग्री का उपयोग करने में मददगार हो ।◆